Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D Jain College, Ara
M.A. semester — III
Phil. CC — 10
Contemporary western Philosophy

Notes

1 Logical Positivism:
Function of Philosophy

GRB BOOKS

तार्किक प्रत्यक्षवाद पाश्चात्य दर्शन के समकालीन विचारधाराओं में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह विचार धारा का विकास भी वैज्ञानिक विश्लेषण की पृष्ठभूमि में होता है। इसका प्रारम्भ Moritz Schlick के विचार से होता है जो Vienna विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक थे उन्होंने अपने प्रयत्न के द्वारा कुछ दार्शनिक वैज्ञानिक और गणितज्ञों को एक साथ मिला कर एक संस्था की स्थापना की जिसका नाम Vienna Circle पड़ा। इसकी स्थापना 1928 ई० में हुई है। प्रारम्भ में इस संस्था के सदस्य Schlick, Neurath, Carnap इत्यादि थे लेकिन बाद में इसका विस्तार हुआ फलस्वरूप इसके सदस्य बाहर से भी अनेक चयनित हो गये जिनमें A. J. Ayer, Wittgenstein इत्यादि थे।

तार्किक प्रत्यक्षवादियों ने मुख्य रूप से इस विचार को प्रतिपादित किया कि दर्शन का उद्देश्य विज्ञान को सुदृढ़ आधार प्रदान करना है और इसके क्षेत्र से उन विषयों को हटाना है जिनका इन्द्रिय परीक्षण सम्भव नहीं है इसके लिए इनलोगों ने भाषा-विश्लेषण की पद्धति को ही उपयुक्त पद्धति के रूप में स्वीकार किया। तार्किक प्रत्यक्षवाद को समझने

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

के लिए पृष्ठभूमि के रूप में प्रत्यक्षवाद
और अनुभववाद को समझना आवश्यक
है। हम जानते हैं कि प्रत्यक्षवाद पाश्चात्य
में हीगल तथा ब्रेडले के विचार में
अपना चरम परिणति को प्राप्त करता
है और अनुभववाद ह्यूम के विचार
संदेहवाद में परिणत हो जाता है।
अनुभववादी दार्शनिक अनुभव को ही
ज्ञान का स्रोत मानते हैं। यह धारणा
ह्यूम के विचार में अधिक दृढ़ हो
गई थी क्योंकि ह्यूम ने इन्द्रिय
परिज्ञान को ही ज्ञान का स्रोत माना था
इन्हीं दोनों विचार धारा पर
तार्किक प्रत्यक्षवाद आधारित है यहीं
प्रत्यक्षवाद का खण्डन किया जाता है
और ह्यूम के अनुभववाद को
स्वीकार किया जाता है। ह्यूम
का अनुभववाद वस्तुतः प्रत्यक्षवाद
है। तार्किक प्रत्यक्षवादी दार्शनिक
ह्यूम को अपना गुरु मानते हैं
लेकिन इसका अर्थ यह नहीं
कि ह्यूम के प्रत्यक्षवाद
और तार्किक प्रत्यक्षवाद में
कोई अन्तर नहीं है। ह्यूम
अनुभव का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण
करते हैं लेकिन तार्किक
प्रत्यक्षवादी तार्किक विश्लेषण को
पद्धति के रूप में स्वीकार करते
हैं। साथ ही ह्यूम के
भाँति भौतिक सत्ता को इसलिए
नहीं स्वीकार किया
है कि या तो वे
अनुपयोगी है या उनके

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes GRB BOOKS

स्वरूप और अस्तित्व को प्रमाणित नहीं किया जा सकता है लेकिन तार्किक प्रत्यक्षवादियों ने अतिभौतिक सत्ता को इसलिए अस्वीकार किया है कि इनके अनुसार (metaphysical language) तत्वशास्त्रीय भाषा का विश्लेषण इस बात निर्णय पर ले जाता है कि इसके निर्णय अर्थहीन है।

तार्किक प्रत्यक्षवाद के दो पक्ष हैं।

(I) निषेधात्मक तथा (II) भावात्मक।

निषेधात्मक पक्ष में यह विचारधारा इन्द्रिय परीक्षण को अर्थ निर्धारण करने के सिद्धान्त में स्वीकार करते है और इसके आधार पर दर्शन के क्षेत्र में से तत्व विज्ञान का बहिष्कार करते है। इन लोगों के अनुसार जिन निर्णयों का इन्द्रिय परीक्षण हो सकता है वही अर्थपूर्ण है "The sense of a proposition is the methods of its verification) तत्वज्ञान के निर्णयों का इन्द्रिय परीक्षण सम्भव नहीं है क्योंकि ये निर्णय अनुभवातीत पदार्थ के विषय में होते है फलस्वरूप तत्व शास्त्र के सभी के सभी निर्णय अर्थहीन है। इसप्रकार Verificational theory of meaning को स्वीकार करके तार्किक प्रत्यक्षवादियों ने दर्शन के क्षेत्र से तत्व विज्ञान का बहिष्कार किया है।

तार्किक प्रत्यक्षवाद

पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

आपने आलोचनात्मक पक्ष में यह दिखलाने का प्रयास करता है कि दर्शन का कार्य क्या है? जब दर्शन के क्षेत्र से तत्त्वविज्ञान को हटा दिया जाता है तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। अनुभव जगत से परे क्या सत्ता है यह विचार करना तार्किक प्रत्यक्षवाद की दृष्टि में कोई प्रयोजन नहीं रखता है तो क्या यह कहा जा सकता है कि अनुभव जगत के विभिन्न पदार्थों का विश्लेषण करना इनका कार्य है? लेकिन तार्किक प्रत्यक्षवादी इसे भी नहीं मानते हैं क्योंकि यह कार्य विभिन्न प्राकृतिक विज्ञानों का है। इसप्रकार दर्शन के क्षेत्र से भौतिक तथा अतिभौतिक दोनों जगत तो क्या यह कहा जाय कि दार्शनिक चिन्तन को ही समाप्त कर दिया जाय? कभी-कभी यह कहा जाता है कि दर्शन सभी विज्ञानों का समन्वय करनेवाला है। यह विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञान संग्रहित करता है और विश्व का एक समग्ररूप उपस्थित करता है इसलिए इसे विज्ञानों का विज्ञान कहा जाता है लेकिन तार्किक प्रत्यक्षवादी इसे भी नहीं मानते हैं यह समन्वय की

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

भावना कोटियों और आकारों की कल्पना का विषय है। अनुभव के द्वारा इसका प्रमाणीकरण नहीं हो सकता है। फिर भी दर्शन का अपना विशिष्ट कार्य है जो किसी भी दृष्टिकोण से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

तार्किक प्रत्यक्षवादियों के अनुसार दर्शन का कार्य विभिन्न विज्ञानों के द्वारा किये गये प्रकथन का विश्लेषण करना है, उनके प्रकारों और सम्बन्धों का अध्ययन करना है। और उनके निर्णायक पदों का अर्थ निर्धारित करना है। इस सन्दर्भ में Carnap ने लिखा है — The proper function of Philosophy is to analyse the statements asserted by scientist and relation and analyse terms as components of those statements and theories as ordered systems of those statements.

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दर्शन कार्यरहित नहीं है बल्कि इसका अपना विशिष्ट कार्य है। इस कार्य को सम्पादित करने के लिए इन लोगों ने तर्कशास्त्र को ही सबसे उपयुक्त पद्धति के रूप में स्वीकार किया है जिसे Logic of

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

science कहा जाता है।
शाखायें दो शाखायें हैं।
1. Logical syntax
2. Semantics
से आकारिक पहली शाखा पूर्णरूप Formal logic शाखा है जिसे कहा जाता है। इसके अन्तर्गत विज्ञान की भाषात्मक अभिव्यक्ति तर्क वाक्यों का अध्ययन किया जाता है। इसमें यह नहीं देखा जाता कि निर्णय का सम्बन्ध वक्ता या श्रोता से क्या है? इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम जटिल निर्णयों को सरल निर्णयों के अन्दर विश्लेषित किया जाता है फिर सरल निर्णयों का विश्लेषण उनके निर्माणक पदों के बीच किया जाता है जिनके द्वारा विभिन्न पद मिलकर किसी अर्थपूर्ण निर्णय की रचना करते हैं। इन निर्णयों के बीच संगतता या असंगतता निर्भरता या स्वतंत्रता इत्यादि सम्बन्धों का अध्ययन करना भी Logical syntax का कार्य है। इसतरह यह स्पष्ट है कि इस शाखा के अन्तर्गत वैज्ञानिक भाषा का विश्लेषण होता है जिसके कारण हम विभिन्न विज्ञानों के मौलिक प्रत्ययों का ज्ञान प्राप्त करते हैं और उनके आपस

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes!

GRB BOOKS

तार्किक संबंधों का अनुगमन करते हैं।

Logical science की दूसरी शाखा सिमेन्टिक्स कहलाती है। इसका सम्बन्ध वक्ता, श्रोता तथा उन विषयों के साथ होता है जिनके विषय में विभिन्न विज्ञानों में निर्णयों के बीच आपसी संबंध को देखना और उसका ज्ञान प्राप्त करना अर्थात पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करना नहीं है। भाषा का संबंध विषय वस्तु से होता है जिस वस्तु के बारे में निर्णय का प्रयोग किया जाता है उस तथ्य के साथ निर्णय का क्या संबंध है। इसे स्पष्ट करना symentics का काम है। कभी-कभी हमारा निर्णय किसी वस्तु के बारे में होता है जैसे This is table, This is a pen इत्यादि। किसी कभी-कभी हमारा निर्णय वस्तु के गुण के बारे में होता है। जैसे — The table is brown, the pen is black इत्यादि। इसी प्रकार कभी कभी निर्णयों के माध्यम से क्रिया (व्यापार) को व्यक्त किया जाता है जैसे The fan is moving fast, He is doing this work. इस प्रकार यह स्पष्ट है कि निर्णयों का संबंध

गम्स पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

वाक्यों के साथ जिनके द्वारा ये निर्णयों की रचना की जाती है। इन वाक्यों का अध्ययन करना symentics कार्य माना गया है।

इसप्रकार तार्किक प्रत्यक्षवादी यह स्पष्ट कर दिया है कि यद्यपि दर्शन का कार्य भौतिक तथा अभौतिक पदार्थों का अध्ययन करना नहीं है क्योंकि ये दोनों ही दर्शन के क्षेत्र से बाहर है फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि दर्शन का कोई कार्य नहीं है। Logic of science कि की महत्वपूर्ण व्याख्याओं के द्वारा दर्शन अपने कार्य को संपादित करता है। अतः कहा गया है "The clarification of the results of the science through logical analysis constitute a very useful and worthy programme which philosophy can legitimately pursue."